REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 7 | APRIL - 2019

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में युवाओं पर स्वामी विवेकानन्द के व्याख्यानों की प्रासंगिकता

डॉ. रेनू चौहान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग,
एस.बी.डी. महिला महाविद्यालय धामपुर (बिजनौर)

''स्वर्ग और नरक की, चिन्ता को छोड़कर अपने स्व और
अहम् को भूलकर केवल तुझे याद कर धर्म सम्प्रदाय की
विधाओं को छोड़कर अशिक्षा, दरिद्रता, शोषण को दूर
पीड़ित मानवता की सेवा में, बुद्ध की भॉति, जीवन
उत्सर्ग हेतु प्रयाण है– नव प्रभात को, आदि है यह–
अन्त है अन्त तक।''

आज देश में अनेक प्रकार से समाज में विद्वेष फैलाया जा रहा है। धर्म के नाम पर तरह–तरह की अनर्गल बातें करके समाज के शांतिपूर्ण माहौल को दूषित करने का प्रयास किया जा रहा है। ऐसी स्थिति में विवेकानन्द के विचार व विश्व धर्म संसद में उनके दिये व्याख्यानों का महत्व और भी बढ़ जाता है, जिनमें उन्होनें भारतीय संस्कृति की गरिमा, सर्वधर्म समभाव, राष्ट्रीय एकता आदि पर बल दिया है। विवेकानन्द वह महान व्यक्ति हुए है, जिन्होनें विश्व के समक्ष न केवल भारतीय संस्कृति को प्रबल तर्कों के साथ प्रस्तुत किया है, बल्कि साथ ही हिन्दू धर्म के बारे में फैली भ्रान्तियों को भी दूर करने का प्रयास किया है। ऐसे महान सपूत का जन्म 12 जनवरी 1863 ई0 को कोलकाता में विश्वनाथ दत्त और उनकी पत्नी भुवनेश्वरी देवी के घर हुआ। उनके बचपन का नाम नरेन्द्रनाथ दत्त था। यद्यपि उनके शैशव काल में कोई ऐसी महत्वपूर्ण घटना तो नहीं घटित हुई, जिसका प्रभाव उनके पूर्ण जीवन पर अमिट बना रहा, किन्तु उनकी प्रारम्भिक शिक्षा के विषय में यह अवश्य कहा जा सकता है कि एक प्रकार से उनकी शिखा व्यवस्था ऐसी थी, जिससे सम्पूर्ण शारीरिक व मानसिक विकास संभव है। उनका ध्यान जिस प्रकार से मानसिक एवं वैचारिक प्रगति की ओर रहा, उसी तरह उनका ध्यान शारीरिक विकास के प्रति भी रहा। उन्होनें संगीत, साहित्य आदि के क्षेत्र में तो दक्षता प्राप्त की ही, साथ ही साथ तैराकी, घुड़सवारी, कुश्ती आदि में भी प्रवीणता प्राप्त की।

किशोरावस्था में उनके मन में ईश्वर को जानने की जिज्ञासा पैदा हुई और इसी जिज्ञासा को शान्त करने के प्रयास में 1881 ई0 में स्वामी रामकृष्ण परमहंस से उनकी भेंट हुई। इस भेंट के फलस्वरूप उनके जीवन में क्रांतिकारी परिवर्तन आया। आरम्भ में संशयवादी दृष्टि के अनुरूप उन्होनें परमहंस की बातों को भी संशय की दृष्टि से देखा, किन्तु प्रारम्भिक संशय, उलझन एवं प्रतिवाद के बाद उन्होनें स्वामी रामकृष्ण के प्रति पूर्ण समर्पण किया तथा उन्हें ही अपना पूर्ण गुरू एवं मार्ग–प्रदर्शक स्वीकार कर लिया।

1886 ई0 में स्वामी रामकृष्ण के निधन के बाद उन्होनें अपने जीवन एवं कार्यों को नया मोड़ दिया। पहले तो उन्होनें संपूर्ण देश की विस्तृत यात्रा की तथा इस प्रकार देश की वर्तमान सामाजिक एवं आर्थिक परिस्थितियाके की जानकारी प्राप्त की, जिससे वे सम्पूर्ण देश्वासियों व देश के बारे में जान सके। उन्होनें देखा कि देश की समृद्ध संस्कृति तथा आध्यात्मिक परम्परा की जकड़ तो भारतीय जनमानस पर प्रबल एवं सुदृढ़ थी, किन्तु देश में निर्धनता के कारण उत्पन्न सामाजिक बुराइयॉ एवं निर्बलता भी व्यापक रूप में विद्यमान थी। इससे उन्होनें समझा कि आध्यात्मिक प्रगति तब तक संभव नहीं हो सकती, जब तक कि भौतिक स्तर की कमजोरियॉ

दूर न हों। अतः उन्होनें एक व्यापक आध्यात्मिक क्रांति की आवश्यकता को महसूस किया और यह भी समझा कि उसके लिए सबल आध्यात्मिक नेतृत्व की भी आवश्यकता है। फलतः उन्होनें इसी दिशा में अपना योगदान देने का निश्चय किया।

जिस समय उनके मन में इस प्रकार की योजना बन रही थी, ठीक उसी समय एक ऐसी महत्वपूर्ण घटना घटित हुई कि उस आध्यात्मिक नेतृत्व की बागडोर सहज रूप में ही उनके हाथों में आ गयी। उन्हें सूचना मिली कि शिकागो में विश्व धर्म–सम्मेलन आयोजित होने को है। उन्होनें वहॉ जाने का निश्चय किया और तय किया कि वहॉ वे भारतीय आध्यात्मिकता की शक्ति को विश्व के सामने प्रस्तुत करेंगे।

शिकागो में उन्होनें केवल हिन्दू धर्म को ही विश्व के समक्ष प्रस्तुत नहीं किया, अपितु सम्पूर्ण भारतीय संस्कृति की विशेषताओं को भी स्पष्ट किया। शिकागो धर्म सम्मेलन व अमेरिका तथा यूरोप के अन्य स्थानों पर दिये गये उनके भाषणों का ऐसा प्रभाव हुआ कि वे भारतीय आध्यात्मिकता के प्रतीक बन गये।

उन्होनें विश्व के अनेक देशों की वृहत् यात्राएँ की वहॉ की अच्छी बातों को जानने व सीखने का प्रयास किया। विदेश से वापस आने पर स्वामी विवेकानन्द एक प्रमुख विचारक तथा भारतीय आध्यात्मिकता के प्रमुख चिन्तक के रूप में प्रतिष्ठित हुए। अब उन्होनें कलकत्ता के निकट बेलूर में स्वामी रामकृष्ण आश्रम की स्थापना की तथा उस आश्रम के माध्यम से जनकल्याण, सेवा तथा सामाजिक सुधार का कार्य बड़े मनोयोग एवं लगन से प्रारम्भ किया। 1899 में उन्होनें पुनः पश्चिम की यात्रा की तथा भारतीय आध्यात्मिकता का संदेश पुनः विदेशों में फैलाया। 4 जुलाई 1902 ई0 को उनका निधन हुआ, किन्तु उन्होनें स्वामी रामकृष्ण आश्रम और उस आश्रम में सेवा–व्रत लेने वाले अनेक संन्यासिकयों की परम्परा इस रूप में स्थापित कर दी कि सेवा, सामाजिक सुधार तथा आध्यात्मिक चिंतन की सरिता तब से सतत प्रवाहित है। कालान्तर में यही नरेन्द्रनाथ दिये गये अपने व्याख्यानों में विवेकानन्द ने अनेक प्रकार से हिन्दू धर्म के साथ भारतीय संस्कृति व उसका महत्व, सर्वधर्म समभाव, भारतीय जनता, दरिद्रनारायण की पूजा, भारतीय नारी, भारतीय कला आदि विषयों को बड़े तार्किक ढंग से प्रकट किया। प्रस्तुत आलेख में इन्हीं बिन्दुओं को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है।

भारत के लिए धर्म की आवश्कता प्रधान नहीं अपितु दरिद्रनारायण के लिए भोजन प्रधान है : स्वामी विवेकानन्द का कहना था कि भूखे व्यक्ति को धर्मोपदेश आवश्यक नही, अपितु भोजन आवश्यक है। यही तथ्य उन्होनें 20 सितम्बर 1893 ई0 को विश्व धर्म सम्मेलन शिकागो में दिये गये अपने व्याख्यान में स्पष्ट किया। उनका कहना था कि 'ईसाईयों को भारत में धर्म प्रचार के लिए जाने से पहले भारत के भूखे लोगों के बारे में सोचना चाहिए व पहले उन्हें भोजन प्रदान करने की दिशा में प्रयास करना चाहिए। सभा में उन्होनें कहा कि ईसाइयों को सत् आलोचना सुनने के लिए सदैव तैयार रहना चाहिए और मुझे विश्वास है कि यदि मैं आप लोगों की कुछ आलोचना करूँ तो आप बुरा नहीं मानेगें। आप ईसाई लोग जो मूर्तिपूजकों की आत्मा का उद्धार करने के लिए अपने धर्म प्रचारकों को भेजने के लिए इतने उत्सुक रहते हैं, उनके शरीरों को भूख से मर जाने से बचाने के लिए कुछ क्यों नहीं करते ? भारतवर्ष में जब भयानक अकाल पड़ा था तो सहस्त्रों और और लाखों हिन्दू भूख से पीड़ित होकर मर गये थे। पर आप ईसाइयों ने उनके लिए कुछ नहीं किया। आप लोग सारे हिन्दुस्तान में गिरजे बनाते है, पर भारत के लिए धर्म की आवश्यकता नहीं है, धर्म उनके पास पर्याप्त है, उनके लिए आवश्यक है रोटी और जब से आपसे रोटी मॉगते हैं तो आप उन्हें पत्थर देते है। भूखों को धर्म का उपदेश देना उनका अपमान करना है, इसलिए उन्हें भोजन चाहिए धर्म नहीं।'

सच्चा धर्म व धार्मिक व्यक्ति : धर्म संसद में साररूप में विवेकानन्द कहना था कि मैं यह नहीं चाहूगाँ कि ईसाई को बौद्ध हो जाना चाहि और न हिन्दू अथवा बौद्ध को ईसाई। परन्तु प्रत्येक को चाहिए कि वह दूसरों के धर्म के सार भाग को आत्मसात करके लाभ प्राप्त करें ओर वैशिष्ट्य की रक्षा करते हुए अपनी निजी वृद्धि के नियम के अनुसार वृद्धि को प्राप्त हो। उनका कहना था कि किसी धर्म के सर्वश्रेष्ठ गुण है– शुद्धता, पवित्रता और दयाशीलता। ये गुण किसी एक धर्म की बपौती नहीं है तथा ऐसे कई महान व्यक्ति प्रत्येक धर्म में हुए है। इस प्रकार विवेकानन्द के धर्म के सम्बन्ध में प्रकट विचार अशोक द्वारा की गई धर्म की व्याख्या से मेल खाते हैं। अशोक ने अपने दूसरे तथा सातवें स्तम्भ–लेखों में धर्म की व्याख्या कुछ इसी प्रकार की है– 'धर्म है साधुता, बहुत से कल्याणकारी अच्छे कार्य करना, पापरहित होना, मृदुता, दूसरों के प्रति व्यवहार में मधुरता, दया, दान तथा शुचिता। इस तरह उपर्युक्त गुणों से युक्त व्यक्ति ही सच्चा धार्मिक व्यक्ति है तथा यही गुण सच्चे धर्म की पहचान है। यही तथ्य विवेकानन्द ने भी सच्चे व्यक्ति तथा सच्चे धर्म के सम्बन्ध में स्पष्ट किये हैं।

शिक्षा : शिक्षा कैसी हो, इसके बारे में स्वामी विवेकानन्द कहते है, 'शिक्षा का मतलब यह नहीं है कि दिमाग में कई ऐसी सूचनाएं एकत्रित कर ली जाएं जिसका जीवन में कोई इस्तेमाल ही नहीं हो। हमारी शिक्षा जीवन निर्माण, व्यक्ति निर्माण और चरित्र निर्माण पर आधारित होनी चाहिए। ऐसी शिक्षा हासिल करने वाला व्यक्ति उस व्यक्ति से अधिक शिक्षित माना जाएगा जिसने पूरे पुस्तकालय को कंठस्थ कर लिया हो। अगर सूचनाएं ही शिक्षा होती तो फिर तो पुस्तकालय ही संत हो गए होते।' लेकिन हमारी शिक्षा व्यवस्था की बच्चों को रट्टू तोता बनाने वाली है जिसमें दिमाग का उपयोग ही नहीं किया जाता है।

शिक्षा के महत्व को रेखांकित करते हुए वे आगे कहते है, 'यूरोप के कई शहरों की यात्रा करके मैंने यह देखा कि वहां के गरीब भी शिक्षित हैं और उनकी हालत हमारे यहां के गरीबों से बहुत अच्छी है। यह फर्क शिक्षा ने पैदा किया है। शिक्षा आत्मबल देती है।' लेकिन देश में अच्छी शिक्षा का मतलब ऐसी पदवी या नौकरी पाना है जोकि ज्यादा से ज्यादा रिश्वत कमाने में मददगार हो।

युवा सशक्तिकरण : देश की 51 फीसदी आबादी की उम्र 25 साल से कम है। इस आधार पर कहना गलत नहीं होगा कि देश की प्रगति काफी हद तक युवाओं पर निर्भर करती है। लेकिन क्या इस वर्ग को वे सुविधाएं मिल रही हैं जिसके आधार पर वह सशक्त बनकर देश की प्रगति में अपनी भूमिका निभा सके ? युवाओं का एक बड़ा वर्ग उसी वंचित समुदाय से है जो अपनी बुनियादी जरूरतों को पूरा करने को लेकर संघर्ष कर रहा है। जो शिक्षित युवा है उसके बारे में कॉरपोरेट जगत की अक्सर शिकायत रहती है कि उसे जो शिक्षा मिली है उसमें गुणवत्ता का अभाव है। आपराधिक घटनाओं में युवाओं की बढ़ती संलिप्तता पर अक्सर चिंता जताई जाती है। कहा जा सकता है कि जिस वर्ग पर देश की तरक्की का सबसे अधिक भार है, वहीं आज बहुत सी समस्याओं का सामना कर रहा है।

युवाओं को राह दिखाते हुए स्वामी विवेकानन्द कहते है, ' कोई भी समाज अपराधियों की सक्रियता की वजह से गर्त में नहीं जाता बल्कि अच्छे लोगों की निष्क्रियता इसकी असली वजह है। इसलिए नायक बनो। हमेशा निडर रहो। यह डर ही है जो दूख लाता है और भय की वजह है अपने आसपास को नहीं समझना। कुछ प्रतिबद्ध लोग देश का जितना भला कर सकते हैं उतना भला कोई बड़ी भीड़ एक सदी में भी नहीं कर सकती। मेरे बच्चों, आग में कूदने के लिए तैयार रहो। भारत को सिर्फ उसके हजार नौजवानों का बलिदान चाहिए। 'लेकिन जिनक पास शिक्षा है वे तो 'ग्रेट अमेरिकन ड्रीम' पूरा करने चले जाते है और सारी उम्र पैसा कमाने में लगे रहते है।

युवाओं को सफलता का सूत्र देते हुए विवेकानन्द कहते है, 'कोई एक विचार लो और उसे अपनी जिंदगी बना लो। उसी के बारे में सोचो और सपने में भी वहीं देखो। उस विचार को जियो। अपने शरीर के हर अंग को उस विचार से भर लो। सफलता का रास्ता यही है। जब तुम कोई काम कर रहे हो तो फिर किसी और चीज के बारे में मत सोचो। इसे पूजा की तरह करो। इस दुनिया में आए हो तो अपनी छाप छोड़कर जाओं। ऐसा नहीं किया तो फिर तुझमें और पेड़–पत्थरों में अंतर क्या रहा ? वे भी पैदा होते है और नष्ट हो जाते हैं' लेकिन सच बात तो यही है कि हमारे देश में ऐसे जागृत युवा बहुत ही कम संख्या में पैदा होते है और वे केवल उदाहरण बनकर रह जाते है। ऐसे लोग अपने जीते जी कोई सकारात्मक परिवर्तन नहीं कर पातें है। अगर आप स्वामी जी जीवित होते तो क्या वे इस देश की हालत पर गर्व करते ? शायद नहीं और यह सब हमारी कमजोरियों, कमियों का नतीजा है।

स्वामी विवेकानन्द जी के व्याख्यानों पर युवाओं का दृष्टिकोण

राष्ट्र चेतना के कीर्ति पुरूष, युवा वर्ग के आदर्श योद्धा स्वामी विवेकानन्द युवा पीढ़ी के लिये प्रेरणा का स्त्रोत हैं, स्वामी विवेकानन्द जी ने राष्ट्र निर्माण में युवाओं की भूमिका को महत्वपूर्ण माना है, उनका मानना था कि नौजवान पीढ़ी अगर अपनी ऊर्जा का इस्तेमान देश की तरक्की में करें तो राष्ट्र को एक नये मुकाम तक पहुँचाया जा सकता है क्योंकि युवा ही वर्तमान का निर्माता एवं भविष्य का नियामक होता है।

अजीत कुशवाहा

जैसा कि राष्ट्रीय सेवा योजना स्वामी विवेकानंद जी के विचारों से प्रेरित कार्यक्रम है जिसमें युवाओं को अपने व्यक्तित्व विकास के साथ–साथ राष्ट्र निर्माण में भूमिका के प्रति प्रेरित किया जाता है। मैनें स्वयं उनकी जीवन शैली से प्रेरणा लेते हुए नेतृत्व क्षमाता, अपने विचारों का प्रेषण, सामुदायिक सेवा एवं वसुधैव कुटुम्ब का भाव सीखा। अक्सर हम युवाओं के जीवन में बहुत से उतार

(इन्दिरा गॉधी एन.एस.एस. पुरस्कार द्वारा मा. राष्ट्रपति, राष्ट्रीय युवा पुरस्कार, भारत सरकार) वर्तमान पद–प्रदेश अध्यक्ष–राष्ट्रीय युवा पुरस्कार विजेता संघ, उ0प्र0

चढ़ाव आते है जब हमारा संघर्ष अपने अन्तिम पड़ाव में होता है, तो परिस्थिति में सकारात्मक निर्णय लेना हमें स्वामी जी के जीवन से लेना चाहिए कि किस तरह से समस्याओं के बीच सामंजस्य बिठाकर लक्ष्य को पाया जा सके। स्वामी विवेकानंद जी का युवाओं के लिये संदेश था कि अपने मन और शरीर को स्वस्थ बनाओ ताकि धर्म अध्यात्म ग्रंथों में बताये आदर्शो में आचरण कर सको, इसके साथ–साथ आज के युवाओं में जरूरत है ताकत की और आत्म–विश्वास की, फौलादी शक्ति और अदम्य मनोबल की। उनका मानना था कि शिक्षा ही एक ऐसा आधार है, जिसके द्वारा राष्ट्र को नये मुकाम तक पहुँचाया जा सकता क्योंकि जब तक देश की रीढ़ ''युवा'' अशिक्षित रहेंगे तब तक देश आजादी मिलना गरीबी हटाना कठिन होगा, इसलिए उन्होनें अपनी ओजपूर्ण वाणी से सोये हुये युवकों को जगाने का कार्य शुरू कर दिया।

मोहित कुमार
कक्षा : एम.ए. समाज कार्य,
बनारस हिन्दू विश्वविद्यालय,
वाराणसी राष्ट्रीय सेवा योजना
पुरस्कार विजेता 2017

भारत एक ऐसा देश है जो युवा शक्ति के नाम से जाना जाता है जहाँ देश में लगभग 65 **प्रतिशत युवाओ के संख्या है। आज भी हमारे देश के युवा स्वामी जी को अपने आदर्श के रूप मानते है। स्वामी जी को आदर्श के रूप में मानना कोई जबरदस्ती नही बल्कि वह विचार जिनसे आज युवा वर्ग काफी प्रभावित होता है। स्वामी जी खुद युवा थे और उनका मानना था कि किसी भी परिवर्तन चाहे वह सामाजिक, आर्थिक या राजनीतिक परिवर्तन पर काम करने करने के लिए बड़े पैमाने पर ऊर्जा की आवश्यकता होती है, इसीलिए उन्होंने युवाओं से अपेक्षा की, कि वह अपनी मानसिक एवं शारिरिक ऊर्जा के माध्यम से समाज मे परिवर्तन लाने तथा समाज मे व्याप्त कुरीतियों पर प्रहार कर बदलाव लाने का कार्य करेंगे।** हम सभी युवा वर्ग स्वामी विवेकानंद जी के बताये गये मार्ग पर चलकर देश को प्रगतिशील बना करते है।

नमस्ते सदा वत्सले मातृभूमे त्वया हिन्दुभूमें सुखं वीर्धताहम्।
महामंगलें पुण्यभूमे त्वदर्थे पतत्वेष कार्यो नमस्ते नमस्ते।।

आचार्य गौरव
शास्त्री अध्यापक
हिमाचल प्रदेश (सोलन)
पूर्व रा.से.यो. स्वयंसेवक

इन शब्दों को आत्मसात करते हुए स्वामी विवेकानंद जी ने अपने प्रेरणास्त्रोत वाक्यों से युवाओं को उज्ज्वल राष्ट्र का निर्माण करने के लिए प्रेरित किया है। आज युवा वर्ण उनके कहे हुए विचारों जैसे–आध्यात्म–विद्या और भारतीय दर्शन के बिना विश्व अनाथ है। इन शब्दों का पालन करते हुए विद्यार्थी हमारी भारतीय संस्कृति को बचाने के लिए संस्कृत भाषा का अध्ययन, संस्कृत का प्रचार–प्रसार यतोहि संस्कृत से हमारे संस्कार उत्पन्न होते है और जब संस्कार आएंगें तभी युवा वर्ग राष्ट्र निर्माण और संस्कृति का संरक्षण कर सकता है। आज का युवा वर्ग चाहे स्वच्छता अभियान, एकता अखण्डता, राष्ट्र को विकसित करने में स्वामी जी के कहे हुए कथनों का पालन करके समूचे विश्व में भारतीय तत्वज्ञान की अद्भुत ज्योति का प्रकाश फैला रहे है और समाज में एक ही संदेश दे रहे है –

अयं निजः परोवेति गणना लघुचेतसाम्।
उदार चरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्।।

तार्किकता मनुष्य के लिये लाभदायक है किन्तु एक सीमा तक (वर्तमान समय में स्वामी विवेकानंद के व्याख्यान का प्रासांगगिता)

तर्कों पर जो जाओगे
तो सब कुछ खाते जाओगे
पहचानो भावो को तुम
बन जाओगे बेकर
तर्को पर जो जाओगे
तो सब कुछ खाते जाओगे

काजल यादव
इन्दरा नगर कालोनी
शॉहजहापुर
एन.एस.एस. स्वयं सेविका

मनुष्य कभी–कभी इतना अभिमानी व इतना ज्ञानी बनने की कोशिश करता है जो ज्ञान वह अपने अच्छे कामों के लिए एकत्रित करता है वह उसके लिये तर्क करने का कारण बन जाता है। वह यह भूल जाता है कि वह एक मनुष्य है और चारों ओर से समाज से घिरा हुआ है। वह उस समाज और वहां के लोगों सभी को परेशानियॉ देता है सिर्फ अपने तर्को के कारण क्योंकि वह अपने दिमाग के आगे किसी और विषय वस्तु को मानना ही नहीं जानता। वह यह भूल जाता है कि यदि उसका स्वभाव ऐसा ही रहा तो वह खुद को समाज से परे पायेगा। वह अपने भावों को पहचानने में असमर्थ हो जायेगा। इसलिये वर्तमान मनुष्य को अपने तार्किक प्रवृत्ति बदलनी होगी।

''एक अच्छे चरित्र का निर्माण हजार ठोकरें खाने के बाद ही होता है।''

प्रभूति चौहान
बी.एफ.टेक (एन.आई.एफ.टी.)
कोलकत्ता

समाज में अनेक बुराईयॉ अपना सिर उठा कर आपसी विद्वेष का भड़का रही है, वही ऐसी स्थिति में स्वामी विवकानंद जी के भारतीय दर्शन की सार्वभौमिकता, सर्वधर्म समभाव, राष्ट्रीय एकता के विचार आज की परिस्थिति के लिये प्रासंगिक है। विवेकानंद जी के इन विचारों से प्रेरणा हमें भारतीय धर्म व संस्कृति के गौरवपूर्ण अतीत से शिक्षा लेते हुए समाज में फैली हुई कुरीतियों को दूर करने का प्रयास करना चाहिए। धर्म के नाम पर आपसी मनमुटाव को बढ़ाने के बजाय हमें आपस में मिलजुल कर रहते हुए राष्ट्र की उन्नति में सहायता करनी चाहिए।

''जितना बड़ा संघर्ष होगा उतनी ही जीत शानदार होगी।''

सिमरन कपूर
धामपुर
एन.एस.एस. स्वंयसेविका

स्वामी विवेकानंद जी के विचारों में से एक भारतीय जनसाधारण की उन्नति के लिए भी है। जनता को लौकिक विद्या सिखानी होगी। हमारे पूर्वज जो प्रणाली दिखा गए हैं, अर्थात् उच्च–उच्च आदर्शों को धीरे–धीरे जनता में प्रवेश करना होगा। धीरे–धीरे जनता में प्रवेश करना होगा। धीरे–धीरे उनको उठाना होगा, धीरे–धीरे उनको समता की धरातल पर लाना होगा। लौकिक विद्या को भी धर्म के माध्यम से सिखाना होगा और यह काम जनता खुद जनसाधारण की उन्नति के लिए कर सकती है। यह काम सहज नहीं, इसे धीरे–धीरे करना होगा।

यदि स्वार्थत्यागी युवकों को एक अच्छा दल मिल जाए, जैसे :– राष्ट्रीय स्वयंसेवक जो स्वार्थत्यागी होते है, राष्ट्र की उन्नति के लिए कुछ भी कर सकते है, ऐसा दल अगर मिल जए, तो काम जल्द ही सिद्ध हो

सकता है। इसके लिए उत्साह और स्वार्थ त्याग की मात्रा पर ही कार्य सिद्धि की शीघ्रता अथवा विलम्ब निर्भर है।

जया भारती
धामपुर
एन.एस.एस. स्वंयसेविका

स्वामी विवेकानंद जी हमारे देश के महान विचारक थे। इन्होनें हमेशा दूसरों को प्रेरणा दी, विवेकानंद जी हमेशा से युवाओं के प्रेरणास्त्रोत रहे है। इनका मानना था कि हम अपनी भावनाओं के अनुसार ही मजबूत और कमजोर पड़ते है। जैसा सोचेगें वैसा ही बनते चले जाते है हम युवाओं को उनसे बहुत सी प्रेरणा मिली जिन्हें अगर हम अपने जीवन में अपनाते है तो हम अपने समाज के लिए कुछ कर पायेगें, स्वामी विवेकानंद जी ने हमेशा कहा है कि हमें हमेशा अपने लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए आगे बढ़ना चाहिए। अपने डर का सामना करना चाहिए और हमेशा सच बोलने की हिम्मत रखनी चाहिए। अगर युवा इन विचारों को ग्रहण करें या अपने जीवन में अपना ले तो वह अपने जीवन के साथ–साथ समाज को भी सुन्दर बना सकता है।

सुरित विश्वास
बी.एफ.टेक. (एन.आई.एफ.टी.)
कलकत्ता

स्वामी विवेकानंद जी ने युवा वर्ग के चरित्र निर्माण के 5 सूत्र दिए– आत्मविश्वास, आत्मनिर्भरता, आत्मज्ञान, आत्मसंयम और आत्मत्याग। उपयुक्त पॉच तत्वों के अनुशीलन से व्यक्ति स्वयं के व्यक्तित्व तथा देश और समाज का पुनर्निर्माण कर सकता है। जिसने निश्चय कर लिया, उसके लिये केवल करना शेष रह जाता है।
जीवन मे एक लक्ष्य साधो और दिन–रात उस लक्ष्य के बारे में सोचो और फिर जुट जाओ उस लक्ष्य के प्राप्ति के लिए। हमें किसी भी परिस्थिति में अपने लक्ष्य से भटकना नहीं चाहिए। तभी समाज में स्वामी विवेकानंद जी के व्याख्यानों की महत्ता बनी रहेगी।

''जिस समय काम के लिए प्रतिज्ञा करो,
ठीक उसी समय पर उसे करना चाहिए,
नहीं तो लोगों का विश्वास उठ जाता है।

कल्पना सैनी
स्वामी विवेकानंद
प्रचारक

मैं स्वामी विवेकानंद जी के इस व्याख्यान से काफी प्रभावित हूँ जो व्यक्ति स्वयं से घृणा करने लगा है। उसके पतन का द्वार खुल चुका है। यही बात राष्ट्र के विषय में भी सत्य है। हमारा पहला कर्तव्य यह है कि हम स्वयं से घृणा न करें, क्योंकि आगे बढ़ने के लिये यह आवश्यक है कि पहले हम स्वयं में विश्वास रखें और फिर ईश्वर में। जिसे स्वयं में विश्वास नहीं उसे ईश्वर में कभी विश्वास नहीं हो सकता तुम जैसा सोचोगे अपने आप को वैसा पाओगे। इस वक्तव्य ने मेरी जीवन जीने की शैली को बदल दिया। ''जब तक खुद पे विश्वास नहीं करते तब तक आप भगवान पे विश्वास नहीं कर सकते।''

कंचन चौहान
धामपुर
स्वामी विवेकानंद प्रचारक

मैं स्वामी विवेकानंद जी के इस अनमोल वक्तव्य से प्रभावित हुई है ''असफलताओं तथा भूलों के प्रति दृष्टिकोण'' वर्तमान में परिप्रेक्ष्य में यदि कई हजार प्रयास करके भी हर बार असफल होता है। तो भी पुनः प्रयास करना चाहिये क्योंकि व्यक्ति अपनी असफलताओं व भूलों के कारणों पर काम कर ले। तो वह एक ना एक दिन निश्चित ही अपने लक्ष्य को प्राप्त कर लेगा।

मेरे युवा साथियों भारत एक ऐसी पुण्य भूमि है जहॉ हजारों वर्षो

से अनेक महापुरूषों ने समय–समय पर भारत को एक नई दिशा दी है। अगर आज के सन्दर्भ में किसी महापुरूष के उपदेशों का युवाओं के लिए अत्यधिक महत्व है तो वह है स्वामी विवेकानंद जी। जिनके उपदेशों से युवा अपने एक बेहतर जीवन का निर्माण कर सकते है। जिनके अंदर अनेकों प्रतिभाएं जन्म लेकर आई थी।

गौरी टंडन
धामपुर
स्वामी विवेकानंद प्रचारक

''स्वामी विवेकानंद जी ने कहा है, कि स्वयं को कमजोर स्मझना सबसे बड़ा पाप है।'' स्वामी विवेकानंद जी को अपना आदर्श मान कर चलते रहे तो आप अपने जीवन में कभी असफल नहीं होगें।

भारतीय युवाओं को प्राचीन भारत से लेकर अभी वर्तमान भारत तक सबसे ज्यादा किसी महापुरूष ने प्रभावित और प्रेरित किया होगा, ते वो है स्वामी विवेकानंद, स्वामी विवेकानंद जी का व्यक्तित्व ही कुछ ऐसा है कि आज वे हर भारतीय युवा के लिये आदर्श है, स्वामी विवेकानंद जी के अनमोल विचार और नियम कोई जो भी युवा अपनाता है तो वो सफलतापूर्वक हर काम कर सकता है, और जीवन में उसे जो चाहे वो पा सकता है। हम सभी जानते है कि स्वामी विवेकानंद एक शक्तिशाली वक्ता थे, उनके भाषण में श्रोताओं को मंत्रमुग्ध करने की ताकत थी। उनके जीवन के इन सुन्दर प्रेरणादायक संदेशो को महत्व आज भी बहुत ज्यादा है। उनको अपनाकर आप भी सफल हो सकते है और खुश रह सकते है। हम इनकी व्याख्यानों को अपने जीवन में आत्मसात करके अपना व समाज का विकास कर सकते है।

इंशात कुमार
दिल्ली
स्वामी विवेकानंद प्रचारक

स्वामी विवेकानंद जी का जीवन आज के युवाओं के लिए प्रेरणा का एक अनन्त स्त्रोत है। स्वामी विवेकानंद जी कहते है कि –''युवा वो है जो अनीति से लड़ता है और दुर्गुणों से दूर रहता है।'' आज के युवाओं के लिए बात अपने आप में आत्मसात करना अत्यधिक आवश्यक है। मेरा यह मानना है कि यदि हम युवा, स्वामी जी की इस बात पर चले तो हम अपने आप में उपस्थित दुर्गुणों को दूर कर स्वयं को और देश में व्याप्त अनीतियों से लड़ अपने देश को बदल सकते। जिससे कि हम और हमाराराष्ट्र दोनों ऊचाइयों को छू सकते है।

प्रिया आर्या
बरेली
एन.एस.एस. स्वयंसेविका

आज का युवा स्वामी विवेकानंद जी के विचारों को भूलकर नशा, चोरी, बलात्कार की तरफ अपने कदम बढ़ाने लगा। जिससे न तो देश का विकास होगा और युवा शक्ति समाप्त हो जायेगी। एक देश की रीढ़ की हड्डी उस देश की युवा शक्ति ही होती है। आज की युवा शक्ति अपने चरित्र की तरफ ध्यान न देकर अपने स्वार्थ के लिए कुछ भी करने को तैयार हो जाती है जिससे उसे अपने माता-पिता की इज्जत व देश के विकास की तरफ कोई ध्यान नही देता।इसलिये स्वामी विवेकानंद जी का कहना है कि

संदीप कुमार
खेड़ी जालब, हिसार
हरियाणा
एन.एस.एस. स्वयंसेवक

प्रत्येक मनुष्य जन्म से ही दिव्य गुणों से परिपूर्ण होता है। ये गुण सत्य, निष्ठा, साहस एवं विश्वास से जाग्रत होते है। मनुष्य को महान बनने के लिए संदेह, ईर्ष्या एवं द्वेष छोड़ना होगा।

स्वामीजी कहते थे कि जिसके जीवन का कोई लक्ष्य नही है, उसका जीवन व्यर्थ है। लेकिन हमें एक बात का ध्यान रखना चाहिए कि हमारे लक्ष्य एवं कार्यों के पीछे शुभ उद्देश्य होना चाहिए।

मेरा मानना है कि आज का जो युवा है उसे स्वामी विवेकानंद जी के विचारों पर चलना बहुत जरूरी है क्योंकि स्वामी जी के विचारों में वो शक्ति है जिसे पाकर युवा आने वाले भविष्य में अपने व अपने देश के लिए कुछ भी कर सकता है।

गजेन्द्र सागर
उझानी
एन.एस.एस. स्वयंसेवक

आज का युवा अपने पूर्वजों की बात पर नाक–भौ सिकोड़ता है उसे शायद ऐसा प्रतीत होता है कि उसके पूर्वज रूढ़िवादी थे और वह अब अपने को आधुनिक और होशियार समझता है और पूर्वजों की अनदेखी करता है, उसे शायद यह ज्ञात नहीं है कि वह जिस स्वतन्त्र आसमान के नीचे आराम से दो वक्त की रोटी और 6–7 घण्टे की चैन की नींद ले पा रहा है उसके पीछे उसके ही पूर्वजों का खून–पसीना है, लेकिन आज उसे ये बाते मूर्खतापूर्ण लगती है। वह उस पाश्चात्य सम्यता की ओर विमुख हो रहा है जिस का नामो निशां तक नहीं था जब हमारी मॉ भारती पुल्कित–पाल्लवित हो रही थी।

अन्त में मैं यही कहना चाहूँगा कि :–

"God is to be warshipped as the one beloved dearer than everything in this and next life."

''जब तक जीना, जब तक सीखना, अनुभव ही जगत में सर्वश्रेष्ठ शिक्षक है।''

अनुष्का चौहान
मुरादाबाद
स्वामी विवेकानंद प्रचारक

हमें एक बात समझ लेनी चाहिए और वह यह कि हमें अपना और अपने समाज का विकास करने के लिए जब से हम पैदा हुए जब तक हम मृत्यु को प्राप्त होगें हमें सीखते रहना चाहिए और हमें एक बात समझ लेनी चाहिए वह यह है कि हमें अन्य राष्ट्रों से अवश्य ही बहुत कुछ सीखना है। जो व्यक्ति कहता है कि मुझे कुछ नहीं सीखना समझ लो कि वह मृत्यु की राह पर है। जो राष्ट्र यह कहता है कि हम सर्वज्ञ है उसका पतन आसन्न है। जब तक जीना है, तब तक सीखना है। तभी हम अपना और देश का विकास कर सकेगें।

निष्कर्ष :–

एक विचार ले, उस एक विचार को अपना जीवन बनाए– इसे सोचो, उसका सपना देखे, उस विचार पर जीएं। मस्तिष्क, मॉसपेशियो, तंत्रिकाओं, अपने शरीर के हर हिस्से को इस विचार से परिपूर्ण रखें और हर दूसरे विचार को छोड़ दें। यह सफलता का मार्ग है।

भारतीय नर–नारी के लिए स्वामी विवेकानंद का संदेश था – 'जीवन संग्राम में वीर बनो। कहो और सबसे कहो कि तुम निर्भय हो। भय का त्याग करो, क्योंकि भय मृत्यु है। भय पाप है, भय आद्योलोक है, भय अधार्मिकता है,

भय का जीवन में काई स्थान नहीं है। इसी प्रकार युवाओं के लिए उन्होनें सोते–जागते, उठते–बैठते, खाते–पीते सर्वोच्च नैतिक सहास पर डटे रहना चाहिए। आज की परिस्थितियों में भी स्वामी विवेकानंद के विचार महत्वपूर्ण ही नहीं हे, अपितु उनकी प्रासांगिकता सदैव बनी रहेगी। उनके विचारों से हम सदैव लाभान्वित होते रहेगें। उनके स्वप्नों के भारत का निर्माण करने में अपना अहम योगदान देगें। यही विवेकानंद जी को सच्ची श्रंद्धाजली होगी।

''समाज को आपसे नहीं आपकी
दौलत से प्यार है। दौलत वह नहीं जो
आपने अर्जित की है। वह आपके अन्तःकरण
में ही निहित है जिसे लोग बौद्धिक
क्षमता के नाम से जानते है।''

सन्दर्भ सूची :–

1. व्यक्तित्व का विकास, प्रकाशक रामकृष्ण मठ और रामकृष्ण मिशन बेलुर मठ, जि. हौरा।
2- http://m-hindi.webdunia.com/hindi-literature-articles/swami-vivekanand
3- बाशम, ए.एल., 'अद्भुत भारत' (अनुवादक– वेंकटेश चन्द्र पाण्डेय), शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा 1954।
4- विवेकानन्द साहित्य, अद्वैत आश्रम, प्रकाशन विभाग, डिही एण्टाली रोड, कोलकाता, 1963।
5- गीता, 4।99।।, गीता प्रेस गोरखपुर, संवत् 2070।

डॉ. रेनू चौहान
असिस्टेन्ट प्रोफेसर, समाजशास्त्र विभाग, एस.बी.डी. महिला महाविद्यालय धामपुर (बिजनौर)

LBP PUBLICATION